International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

बाबा मस्तनाथ जी एवं स्वामी नितानन्द का समाज दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन

कान्ता
शोधार्थी इतिहास विभाग
बबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
श्रोहतक

परिचय

हरियाणा की तपोभूमि पर समय–समय पर अनेक सन्तों, सिद्धपुरूष बाबाओं एवं महान विभूतियों ने जन्म लिया है। जिनमें सन्त काव्य परम्परा के स्वामी नितानन्द जी एवं नाथपंथी परम्परा के श्री बाबा मस्तनाथ जी[1] का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। श्री बाबा मस्तनाथ जी का जन्म रोहतक जिले के कंसरेटी गाँव में विक्रम संवत 1707 को हुआ था। इनको गुरू गोरख नाथ जी का अवतार माना जाा है। हाँलाकि स्वामी नितानन्द जी के जन्म सम्बन्धी कोई प्रमाणिक आधार तो नहीं मिले है। इसी के परिणाम स्वरूप प्राचीन साहित्य एवं व्यक्तियों के विषय में अनेक मतभेद पाए जाते है। क्योंकि प्राचीन भारतीय मनीषियों का ऐतिहासिक तथ्यों की अपेक्षा मूल सत्य क अन्वेषण की ओर विशेष ध्यान रहा है। इसका मूल कारण यही है, कि ना तो इन व्यक्तियों के मन में स्वंय के नाम तथा प्रतिष्ठा की भावना थी और ना ही किसी प्रकार की कोई आत्मश्लाथा की लालसा थी, बल्कि इनका मूल लक्ष्य तो विषय को अनुभूति की कसौटी पर कस कर उसे ही नरूपित करना था, दूसरे यह सन्त देशकाल एवं परिवार की सीमाओं में आबाद्ध न हो, सार्वभौम एवं सार्वकालिक धरातल पर प्रतिष्ठित होकर सर्वजन हिताय ही लोक–मांगलिक वाणी में स्थायी मूल्यों एवं सत्यों को उद्घाटित करने में सलंग्न रहते थे, इसलिए इनके विषय में उक्त बात चरितार्थ होती है कि

"जाति ना पूछो साधु की[2]

पूछ लीजिए ज्ञान"

स्वामी नितानन्द जी विषय में यही बात लागू होती है।

पं0 सागरमल जी के लेखों के अनुसार स्वामी नितानन्द जी क जन्म हरियाणा के नारनौल में एक ब्राह्मण परिवार में 1766 में हुआ था। अकबर के नौरत्नों में स्थान रखने वाले बीरबल वंश की परम्परा से आते है। बचपन में इनका नाम नन्दलाल था, गुरू गुमानी दास जी से दीक्षित होने के बाद इनको स्वामी नितानन्द जी के नाम से सजाना गया।

सामाजिक दर्शन

अगर हम स्वामी नितानन्द जी एवं श्री बाबा मस्तनाथ जी के सामाजक दर्शन (विचारों) को एक साथ या तुलनात्मक दृष्टि से देखे तो कोई विशेष अन्तर नजर नहीं आता, क्योंकि दोनों का समय लगभग वही है जो भक्तिकाल के अन्तिम व रीतिकाल काल की शुरूआत का है। जिसमें एक ओर तो मुस्लिम आक्रमणकारियों का भय था तो दूसरी तरफ शासक भी अयोग्य, अकर्मण्य एवं भोगविलास में डूबे हुए थे। जिससे आम जनता त्रस्त थी व चंद चाटुकार कवि धन के लिए दरबारों में काव्य प्रशस्ति कररहे थ। ऐसे में कहा जाता है कि जब–जब धरती पर धर्म की हानि होती है, तब–तब भगवान ने किसी ना किसी का अवतार लेकर जगत का उपकार किया है। इसी तरह महायोगी गुरू गोरखनाथ जी ने सिद्ध शिरोमणी बाबा मस्तनाथ जी क रूप में अवतरित होकर अनेक प्रकार की यौगिक क्रियाएं, लीलाएँ एवं अद्भूत सिद्धियाँ दिखाते हुए जग का उद्धार किया व पथभ्रष्ट लोगो को सन्तमार्ग दिखाया।

हिन्दी साहित्य के निर्गुण सन्त काव्य परम्परा क अनेक सन्तों में (नामदेव, रामानन्द, रैदास, कबीरदास) आदि की परम्परा में प्रमुख स्वामी नितानन्द जी चाहते थे कि समाज में कुरीतियाँ, अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ सदा–सदा के लिए समान्त हो जाए। एक ईमानदार एवं श्रेष्ठ समाज का निर्माण हो, जिसमें वर्ण जाति को काई भेदभाव ना हो, सभी मानव बराबर है, सभी ईश्वर के अंग है।

स्वामी जी का सामाजिक दर्शन हम इनकी वाणी या दोहों के माध्यम से जो "सत्य सिद्धांत प्रकाश" के नाम से प्रकाशित है, जान सकते है। स्वामी नितानन्द जी की खास विशेषता ये है, कि वे हरेक बात को कबीरदास की तरह डंके की चोट पर, बिना किसी भय के रखते है। 1400 से 1800 ई. तक के काल को सन्त काव्य धारा के स्वर्गयुगण के नाम से भी जाना जाता है। इन संतों के मुख से निकली वाणी आज भी समाज का मार्गदर्शन करती है।

जैसे स्वामी जी सत्य का महत्त्व बताते हुए कहते है किः–

"साच सरीखा सुख नहीं, झूठ सरीखा रोग[3]
नितानन्द हर सच में, मिथ्या झुठ वियोग"

चेतना के संदर्भ में उन्होंने बताया कि यह शरीर नश्वर है, इस पर घमण्ड नहीं करना चाहिए, जितना हो सके इसका प्रयोग जन–कल्याण के लिए करना चाहिए।

"नितानन्द नहीं गर्मित, यह काया छिन्न–भिन्न[4]
देखत ही मिट जाएगी, जैसे रंग पतंग"

स्वामी नितानन्द जी व बाबा मस्तनाथ जी ने समाज में फैली वर्ण व्यवस्था के खिलाफ पुरजोर आवाज उठाई, उन्होंने कहा मानव मात्र एक ही जाति है, और ब्रह्मा सबका पिता है।

सभी उसी की सन्तान है। वर्णव्यवस्था का सन्तों के लिए कोई भी महत्त्व नहीं है। सभी सन्त, महात्मा एक स्वर में इस भेदभाव की निदा करते है।

"सूरत साहब की घड़ी, आदम क्या हैवान"[5]

स्वामी जी कहते है, कि सभी प्राणिमात्र का सम्मान करना उचित है। क्योंकि सभी उस ब्रह्मा के पैदा किए हुए है।

"जैसा तन है अपना, ऐसा सब का ज्ञान"[6]

उन्होंने हिन्दू–मुसलमान का भेद भी व्यर्थ बताया कि जिनके दिल में सच्चाई है, वही हृदय राम का दरबार है, अल्लाह की दरगाह है। अन्यथा जिस हृदय मलिन है; वह चाहे किसी जाति का हो, उसे नरक में जाना पड़ता है। प्रभु तो सच्चे दिल में बसत है। यह भेद दृष्टि मनुष्य कृत है। प्रभु के लिए सारे भेद व्यर्थ है।

"जिनके दिल में साँच है, उनका दिल दरगाह[7]

नितानन्द जिस रोग दिल, सो दो जगह को जाह"

साथ ही उन्होंने मुसलमानों के दोहरे जीवन को अपने दोहो के माध्यम से चुनौती दी और कहा कि क्यों मुसलमान अपनी कथनी–करनी में अन्तर करते है। जब वे मस्जिद में ऊँची बांग देकर कहते है कि सभी का अल्लाह एक है। और जब हाथ में कटार लेकर जीवन हत्या करते है तो अपने कथन भूल जाते है।

"चढ़ मजीद पर बाँग दे, कहँ एक अल्लाह

जीव हतै जब दूसरा, भूल गया दरगाह"

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

स्वामी नितानन्द जी ने उस समय समाज में अपने आसपास के ढोंगी पंडितों द्वारा फैलाए गए अंध विश्वासों एंव रूढ़ियों से दुःखी होकर उनकी कड़ी भर्त्सना की, कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से किसीस को बैकुण्ठ जाने का रास्ता नहीं मिल जाता।

"कवि के ब्राह्मण कुटिल है, ताहि ना न्यौत जिमाया[8]
दूध पिला सर्प को, सौ भी विष हो जाए"

कबीर पन्थी परम्परा के सन्त नितानन्द ने साम्प्रदायिकता का हमेशा विरोध किया। वे पन्थों में पनपने वाली रूढ़िवादिता, अंधश्रद्धा को अच्छी तरह पहचानते थे जिसका उन्होंने जमकर खण्डन किया। जैसे "आधुनिक कबीर" में डॉ0 राजदेव सिंह ने सन्तों की साम्प्रदायिकता का उल्लेख बड़े सुन्दर ढंग से किया है। कि कैसे कबीर ने आसपास की परिस्थितियों को बदल डालने के लिए किसी सामाजिक संगठन की जरूरत नहीं समझी, दुनिया को सुधारने की अपेक्षा निज को सुधारना उनकी दृष्टि से अधिक सही था, जो मनुष्य की स्वतंन्त्रता का विश्वासी है।

स्वामी नितानन्द जी ने समाज सुधार के कार्यों के अर्न्तगत समाज की विभिन्न बुराइयों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। कि मनुष्य को मदिरा, माँस आदि के सेवन से दूर रहना चाहिए। मदिरा के सेवन से गृहक्लेश बढ़ता है। समाज में चौरी, डकैती, जुआ खेलने की प्रवृत्ति बढत्रती है। तथा माँस भक्षण तो संसार में भूत–प्रेत करते है। अगर मनुष्य भी इनका

प्रयोग करेगें तो वो जीवों को खकर भूत–प्रेतों की श्रेणी में आ जाएगे तथा परिवार सहित नरक के भागीदार बनेगें।

"माँस खाय सो मनुष्य ना, वे सम भूत प्रेत[9]

नितानन्द वे पड़े नरक में, कुल परिवार समेत"

कबीर को पथगामी मानकर स्वामी नितानन्द जी ने मूर्तिपूजा की कड़ी आलोचना की।

"पाथर से ठाकुर मिले, तो हर से बड़ा पहाड़"[10]

नितानन्द साची कहँ, करै पुजारी राड़"

पत्थर पूजको की तरह तीर्थ करने वाली भी भ्रम में रहते है। उपर से तो शरीर साफ कर लेते है। परन्तु भीतर का मैल साफल नहीं कर पाते, फिर उनके व्रत तीर्थ करने से क्या लाभ।

हाँलाकि अधिकांश सन्तों की तरह स्वामी नितानन्द जी भी नारी को निदंक मानते है। किन्तु सम्यक् अध्ययन से पता चलता है कि इनका नारी विषय दृष्टिकोण स्वस्थ है। अपने व्यावहारिक जीवन में वे नारीी को पत्नी, बहन, माता और पुत्री के रूप में यथायोग्य सम्मान देते रहे है। नितानन्द ने उन पवित्र नारियों के लिए भी अपने प्रणम्य व वंदनीय विचार प्रकट किए है। कि पतिव्रता नारी को किसी श्रृंगार अथवा प्रसाधन की आवश्यकता नहीं है। उसका शील एवं चरित्र ही उसका श्रृंगार है।

"लीलावन्त लज्जा भरी, तिम्बन तम्बोल मुख लाल[11]

नितानन्द हर उस बसे, यह पतिव्रता चाल"

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

जबकि नारी की कामिनी रूप इन्हें भक्ति में बाधक लगता है। प्रमाद रूपी नारी के कामसक्ति के घातक प्रभाव उल्लेख करते है। कि यह ज्ञान, ध्यान, बल, बुद्धि और भक्ति को नष्ट कर देती है। इतना ही नहीं कामी नर कामिनी नारी के प्रीााव से नरक भोगता ह। इसके प्रभाव से इस संसार में कोई नहीं बचा है।

"नितानन्द यह नाहरी, भखे भारजा होय[12]
भाग गया सो उबरा, लाग मुआ सब कोय"

उन्होंने कहा कि कामिनी नारी माया रूप है। जैसे समाया रूप है। जैसे माया रूप अदृष्ट होता है। उसी प्रकार कामिनी भी पण्डित, ज्ञानी, शूर, सभी को परास्त कर देती है।

"माया होकर मारती जग से सदा अतीत
पण्डित, ज्ञानी सूरमा लिए काम सब जीत"

साथ ही संत नितानन्द एंव बाबा मस्तनाथ जी दोनों ने ही गुरू की महिमा व गुरू संगति पर जो दिया है। कि गुरू भगवान से भी बड़े होते है।

"गुरू के दर्शन को चले, प्रज्ञा क नर–नार[13]
दर्शन पाकर सब करे, संतो का सत्कार"

"नमो परम गुरू सर्व में, नमो सन्त बलवन्त[14]
गुरू गुमानी दास जी, तुमको मनो अनन्त"

निष्कर्षतः हम कह सकते है, कि सन्त नितानन्द जी और बाबा मस्तनाथ जी ने सभी तरह के सामाजिक दर्शनों (विचारों) को उद्घाटित किया है। इन सामाजिक मूल्यों में भेदभाव, जाति–पति, ढोंग, पाखण्ड, नारी विषयक, गुरू महिमा आदि जीवन विषयक एवं नीतिपरक मूल्यों के विविध आयामों की ओर संकेत मिलता है। ये सभी समाज विषयक मूल्य आज भी प्रांसगिक है। इन संतों की वाणी पहले, आज और आगे भी लोगों का मार्गदर्शन करती रहेगी।

सन्दर्भ सूची

1– शिवानी शर्मा, दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरूदेव

2– डॉ0 रामकुमार भारद्वाज, अनिल भारद्वाज, हरियाणा के सन्त कवि नित्यानन्द

3– स्वामी नितानन्द, सत्य सिद्धान्त प्रकाश, सच का अंग, दोह–9, पृ0 212

4– चेतना का अंग दोह–110, पृ0 121

5– सत्य सिद्धान्त प्रकाश, सा0 4.10, पृ0 308

6– वही, सा0 5.10, पृ0 308

7– वही, सा0 25, पृ0 310

8– वही, सा0 18, पृ0 170

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

9— वही, दोहा 50

10— वही, सा0 16, पृ0 197

11— वही, सा0 90, पृ0 98

12— वही, सा0 19, पृ0 174

13— शिवजी शर्मा, दिव्यभूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरूदेव, पृ0 480

14— स्वामी नितानन्द सत्य सिद्धान्त प्रकाश, गुरूदेव का अंग पृ0 1